Gupta period (Part -21)

- कुमार गुप्त -I महेन्द्रादित्य
- 415 - 54 A.D.

चंद्रगुप्त -II विक्रमादित्य की मृत्यु के पश्चात एक महत्वपूर्ण शासक कुमार गुप्त -I महेन्द्रादित्य था. इसके काल के सुव्यवस्थित शासन की जानकारी उसके मंदसौर अभिलेख से मिलता है. जो प्रशस्ति के रूप में है. इस प्रशस्ति के रचनाकार 'वत्स भट्टी' थे. मदसौर अभिलेख में कुमारगुप्त के राज्यपाल 'बंधुवर्मन' का उल्लेख मिलता है. जिसने वहाँ पर एक सूर्य मंदिर का निर्माण कराया था. गुप्तकालीन शासकों में सबसे ज्यादा अभिलेख कुमारगुप्त के ही मिले हैं.

कुमारगुप्त -I के शासनकाल में के अंतिम वर्षों में पुष्यमित्रों का आक्रमण हुआ था. उसकी जानकारी स्कंदगुप्त के भितरी स्तंभ अभिलेख से मिलता है. इसका सामना करने के लिये उसने अपने पुत्र स्कंदगुप्त को भेजा था. जिसने पुष्यमित्रों को पराजित किया था. ये पुष्यमित्र कौन थे, कहाँ से आये थे. इसकी जानकारी उपलब्ध नहीं हो पाती.

कुमारगुप्त के काल में ही Nalanda University की स्थापना की गयी. जिसे oxford of Mahayan Bodha कहकर पुकारा जाता है.

स्कंदगुप्त क्रमादित्य

भितरी स्तंभ लेख (गाजीपुर U.P.)
↓
से हूण आक्रमण की जानकारी

- 415-54 A.D.
- गिरनार अभिलेख (गुजरात)
-

- स्कंद गुप्त क्रमादित्य ने युवराज के रूप में कुमारगुप्त महेन्द्रादित्य के काल में होनेवाले पुष्यमित्रो के आक्रमण का सफलता पूर्वक सामना किया था। इसके भितरी स्तंभ लेख से यह ज्ञात होता है कि इसके काल में मध्य-एशियाई एक बर्बर जाति हूणो का आक्रमण हुआ।

स्कंदगुप्त ने 466 A.D. में चीनी सोंग सम्राट के दरबार में अपना राजदूत भेजा था। जिससे यह ज्ञात होता है कि उसने सुदूर चीन के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित किया था।

प्रशासनिक सुविधाओ के लिये स्कंदगुप्त ने अपनी राजधानी "अयोध्या" में स्थापित की थी।